UP Board Class 12 Hindi General 2026 (Set 302 BJ) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की रचना है

(A) 'चिंतामणि'

(B) 'पंचपरमेश्वर'

(C) 'यामा'

(D) 'चारुचन्द्रलेख'

Correct Answer: (D) 'चारुचन्द्रलेख'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
चार कृतियों में से वह चुननी है जो आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखी है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'चारुचन्द्रलेख' द्विवेदी जी का उपन्यास है। इसके अलावा उनके उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'पुनर्नवा' भी प्रसिद्ध हैं। 'अशोक के फूल' और 'कुटज' उनके निबन्ध-संग्रह हैं।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:

(A) ‘चिंतामणि’ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों का संग्रह है।
(B) ‘पंचपरमेश्वर’ प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी है।
(C) ‘यामा’ महादेवी वर्मा का कविता-संकलन है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) ‘चारुचन्द्रलेख’ है।

1(b). 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' - यह आत्मकथा विधा है

(A) सुमित्रानंदन पंत की
(B) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की
(C) हरिवंशराय 'बच्चन' की
(D) 'अज्ञेय' की

Correct Answer: (C) हरिवंशराय 'बच्चन' की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’ नामक आत्मकथा के लेखक को पहचानना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’ हरिवंशराय ‘बच्चन’ की आत्मकथा है। यह 1969 में प्रकाशित हुई। उनकी आत्मकथा चार भागों में है: ‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’, ‘नीड़ का निर्माण फिर’, ‘बसेरे से दूर’ और ‘दशद्वार से सोपान तक’।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) सुमित्रानंदन पंत ने ‘साठ वर्ष: एक रेखांकन’ लिखा है।
(B) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा का नाम केवल ‘आत्मकथा’ है।
(D) ‘अज्ञेय’ की प्रसिद्ध कृति ‘शेखर: एक जीवनी’ उपन्यास है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) हरिवंशराय 'बच्चन' की है।

1(c). 'कविवचनसुधा' के संपादक थे

(A) बालकृष्ण भट्ट

(B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

(C) प्रतापनारायण मिश्र

(D) बालमुकुन्द गुप्त

Correct Answer: (B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
पत्रिका 'कविवचनसुधा' के सम्पादक का नाम बताना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'कविवचनसुधा' भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा 1867 ई० में काशी से निकाली गई पत्रिका थी। शुरू में यह मासिक थी, बाद में पाक्षिक और साप्ताहिक हुई। भारतेन्दु जी की दूसरी पत्रिकाएँ 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 'बाला बोधिनी' हैं।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) बालकृष्ण भट्ट 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे।
(C) प्रतापनारायण मिश्र 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक थे।
(D) बालमुकुन्द गुप्त 'भारतमित्र' से जुड़े रहे।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) भारतेन्दु हरिश्चंद्र है।

1(d). 'परदा' कहानी के लेखक हैं

(A) प्रेमचंद

(B) जयशंकर प्रसाद

(C) अमरकांत

(D) यशपाल

Correct Answer: (D) यशपाल

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'परदा' कहानी के लेखक को चुनना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'परदा' यशपाल की प्रसिद्ध कहानी है। इसमें एक पतनशील परिवार की दिखावटी इज्जत और गरीबी का व्यंग्यात्मक चित्रण है। यशपाल प्रगतिवादी विचारधारा के कथाकार हैं। उनके उपन्यास 'झूठा सच' और 'दिव्या' भी प्रसिद्ध हैं।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) प्रेमचंद की कहानियाँ 'कफन' और 'पूस की रात' आदि हैं।
(B) जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ 'आकाशदीप' और 'पुरस्कार' हैं।
(C) अमरकांत की कहानियाँ 'जिन्दगी और जोंक' और 'डिप्टी कलेक्टरी' हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) यशपाल है।

1(e). 'अजातशत्रु' रचना की विधा है

(A) उपन्यास

(B) कहानी

(C) नाटक

(D) आत्मकथा

Correct Answer: (C) नाटक

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'अजातशत्रु' किस विधा की रचना है, यह पूछा गया है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं।

चरण 2: सही विकल्प की पहचान:
जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख कवि होने के साथ हिन्दी के श्रेष्ठ नाटककार भी थे। 'अजातशत्रु' उनका ऐतिहासिक नाटक है। इसमें मगध नरेश बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु की कथा है। इसी कारण सही विकल्प (C) नाटक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) उपन्यास: प्रसाद के उपन्यास 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा) हैं, 'अजातशत्रु' नहीं।
(B) कहानी: प्रसाद के कहानी-संग्रह 'आकाशदीप', 'आँधी', 'इन्द्रजाल' आदि हैं।
(D) आत्मकथा: प्रसाद ने कविता में 'आत्मकथ्य' लिखा था, पर 'अजातशत्रु' आत्मकथा नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) नाटक है।

2(a). 'अज्ञेय' की रचना है

(A) 'कुरुक्षेत्र'

(B) 'हरी घास पर क्षण भर'

(C) 'रश्मिरथी'

(D) 'उर्वशी'

Correct Answer: (B) 'हरी घास पर क्षण भर'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह जानना है कि दिए गए चार नामों में से कौन-सी रचना 'अज्ञेय' की है। अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन है।

चरण 2: सही विकल्प:
'हरी घास पर क्षण भर' अज्ञेय का प्रसिद्ध कविता-संग्रह है, जो प्रयोगवाद की प्रमुख कृति मानी जाती है। इसलिए सही विकल्प (B) है।

चरण 3: अन्य विकल्प किसके हैं:
(A) 'कुरुक्षेत्र': रामधारी सिंह 'दिनकर' का प्रबन्ध-काव्य है।
(C) 'रश्मिरथी': यह भी दिनकर का खण्डकाव्य है, जिसमें कर्ण की कथा है।
(D) 'उर्वशी': यह भी दिनकर का काव्य-नाटक है, जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) 'हरी घास पर क्षण भर' है।

2(b). 'कामायनी' में सर्गों की संख्या है

(A) बारह

(B) चौदह

(C) पंद्रह

(D) सत्रह

Correct Answer: (C) पंद्रह

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'कामायनी' जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें कितने सर्ग हैं, यह पूछा गया है।

चरण 2: सर्गों की संख्या:
'कामायनी' में कुल पन्द्रह सर्ग हैं। ये सर्ग चिन्ता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनन्द हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) बारह, (B) चौदह और (D) सत्रह सर्ग नहीं हैं। इनमें से कोई भी संख्या 'कामायनी' के सर्गों की गिनती से मेल नहीं खाती।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) पन्द्रह है।

2(c). 'संतकाव्य धारा' के प्रमुख कवि हैं

(A) तुलसीदास

(B) नाभादास

(C) कबीरदास

(D) सूरदास

Correct Answer: (C) कबीरदास

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'संतकाव्य धारा' भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा को कहते हैं। इसका प्रमुख कवि पूछा गया है।

चरण 2: सही विकल्प:
संतकाव्य धारा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। वे निराकार ब्रह्म की उपासना करते थे और जाति-पाँति तथा बाहरी आडम्बर का विरोध करते थे। उनकी वाणी 'बीजक' में संकलित है। इसलिए सही विकल्प (C) कबीरदास है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) तुलसीदास: रामभक्ति शाखा (सगुण) के कवि हैं।
(B) नाभादास: ये भी रामभक्ति शाखा के कवि हैं, 'भक्तमाल' इनकी रचना है।
(D) सूरदास: कृष्णभक्ति शाखा (सगुण) के कवि हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) कबीरदास है।

2(d). सुमित्रानंदन पंत 'सुकुमार' कवि हैं

(A) प्रकृति के
(B) श्रृंगार के
(C) ज्ञान के
(D) भक्ति के

Correct Answer: (A) प्रकृति के

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
सुमित्रानन्दन पंत को 'सुकुमार कवि' कहा जाता है। यह जानना है कि वे किस विषय के सुकुमार कवि हैं।

चरण 2: सही विकल्प:
पंत का बचपन उत्तराखण्ड के कौसानी की सुन्दर प्रकृति की गोद में बीता। उनकी कविता में प्रकृति के कोमल और मनोहर चित्र भरे हैं। इसलिए उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। सही विकल्प (A) प्रकृति के है।

चरण 3: अन्य विकल्प:
(B) शृंगार, (C) ज्ञान और (D) भक्ति के कवि के रूप में पंत की पहचान नहीं है। 'पल्लव', 'गुंजन', 'वीणा' और 'ग्रन्थि' जैसे संग्रहों में प्रकृति-प्रेम ही प्रमुख है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) प्रकृति के है।

2(e). 'राम की शक्ति पूजा' के रचयिता हैं

(A) सुमित्रानन्दन पन्त

(B) महादेवी वर्मा

(C) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(D) गिरिजाकुमार माथुर

Correct Answer: (C) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'राम की शक्ति पूजा' एक प्रसिद्ध लम्बी कविता है। इसके रचयिता का नाम पूछा गया है।

चरण 2: सही विकल्प:
'राम की शक्ति पूजा' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है। इसमें राम रावण से युद्ध के समय शक्ति की आराधना करते हैं और अन्त में देवी उन्हें विजय का आशीर्वाद देती हैं। यह छायावादी काल की श्रेष्ठ कविता मानी जाती है। इसलिए सही विकल्प (C) है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) सुमित्रानन्दन पन्त: 'पल्लव', 'गुंजन', 'लोकायतन' के रचयिता हैं।
(B) महादेवी वर्मा: 'नीहार', 'रश्मि', 'यामा', 'दीपशिखा' की रचनाकार हैं।
(D) गिरिजाकुमार माथुर: 'मंजीर', 'नाश और निर्माण' जैसे संग्रहों के कवि हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' है।

3(i). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश की पहचान:
राष्ट्र के तीन अंगों (भूमि, जन और जन की संस्कृति) का वर्णन करने वाला यह गद्यांश हिन्दी के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है।

चरण 2: पाठ का नाम:
पाठ का नाम 'राष्ट्र का स्वरूप' है। यह एक विचारप्रधान निबन्ध है, जिसमें राष्ट्र के निर्माण के मूल तत्त्वों को समझाया गया है।

चरण 3: लेखक का नाम:
इस निबन्ध के लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं। वे भारतीय संस्कृति, पुरातत्त्व और कला के प्रसिद्ध विद्वान थे।

अंतिम उत्तर:
पाठ: राष्ट्र का स्वरूप; लेखक: डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

3(ii). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

चरण 2: प्रसंग:
लेखक ने राष्ट्र के तीन अंग बताए हैं: भूमि, जन और संस्कृति। इन पंक्तियों में वे जन की संस्कृति को राष्ट्र का तीसरा और आवश्यक अंग सिद्ध करते हैं।

चरण 3: शब्दार्थ:
कबंध: सिर कटा हुआ धड़। अभ्युदय: उन्नति, उत्थान। वृद्धि: बढ़ना।

चरण 4: व्याख्या:
लेखक कहते हैं कि संस्कृति के बिना जन की कल्पना नहीं हो सकती। ऐसा जन सिर कटे धड़ के समान है, जिसमें जीवन तो दिखता है पर विचार और दिशा नहीं होती। जैसे मस्तिष्क शरीर को चलाता है, वैसे ही संस्कृति जन को सोच, आचरण और आदर्श देती है। इसीलिए संस्कृति को जन का मस्तिष्क कहा गया है। आगे लेखक बताते हैं कि जब संस्कृति का विकास और उन्नति होती है, तभी राष्ट्र आगे बढ़ता है। संस्कृति कमज़ोर हो तो राष्ट्र भी कमज़ोर होता है।

निष्कर्ष:
राष्ट्र की सच्ची उन्नति उसकी संस्कृति की उन्नति पर टिकी है।

3(iii). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(iii) राष्ट्र का तीसरा अंग क्या है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश में खोजें:
गद्यांश की पहली पंक्ति में ही उत्तर दिया गया है: 'राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है।'

चरण 2: उत्तर:
राष्ट्र के तीन अंगों में भूमि पहला और जन दूसरा अंग है। तीसरा अंग जन की संस्कृति है। लेखक के अनुसार संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है, यानी उसकी सोच और पहचान का आधार है।

अंतिम उत्तर:
राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है।

3(iv). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(iv) मनुष्य के जीवन की श्वास-प्रश्वास क्या है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश में खोजें:
गद्यांश की दूसरी पंक्ति कहती है: 'मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है।'

चरण 2: उत्तर की व्याख्या:
मनुष्य ने अनेक युगों में जो सभ्यता और संस्कृति बनायी है, वह उसके जीवन के लिए साँस के समान आवश्यक है। जैसे साँस के बिना जीवन नहीं चलता, वैसे ही संस्कृति के बिना जन का जीवन अधूरा है।

अंतिम उत्तर:
मनुष्यों द्वारा युगों में निर्मित सभ्यता ही उनके जीवन की श्वास-प्रश्वास है।

3(v). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(v) 'विरहित' तथा 'अन्तर्निहित' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द विरहित:
'विरहित' शब्द 'वि + रहित' से बना है। इसका अर्थ है रहित, हीन या वंचित, यानी जिसके पास कोई चीज न हो। जैसे: धन से विरहित व्यक्ति। गद्यांश में इसका आशय है कि भूमि और जन को अपनी संस्कृति से अलग कर दिया जाए।

चरण 2: शब्द अन्तर्निहित:
'अन्तर्निहित' शब्द 'अन्तः + निहित' से बना है। इसका अर्थ है भीतर छिपा हुआ या समाया हुआ। जैसे: इस कथन में गहरा अर्थ अन्तर्निहित है। गद्यांश में जन के जीवन का सौन्दर्य और यश संस्कृति में ही समाया हुआ बताया गया है।

अंतिम उत्तर:
विरहित = रहित, वंचित; अन्तर्निहित = भीतर छिपा हुआ, समाया हुआ।

OR

3(i). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती है फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी के प्रसिद्ध ललित निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध 'अशोक के फूल' से लिया गया है। यह निबन्ध हमारी पाठ्यपुस्तक 'गद्य-खण्ड' में संकलित है।

चरण 2: अंश की पहचान:
इस अंश में लेखक खिले हुए अशोक के फूल को देखकर अपने उदास मन की बात शुरू करता है। वह बताता है कि उसकी उदासी का कारण क्या नहीं है और फिर आगे कारण खोजने की भूमिका बाँधता है।

अंतिम उत्तर:
सन्दर्भ: पाठ 'अशोक के फूल', लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी।

3(ii). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती है फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'अशोक के फूल' नामक ललित निबन्ध से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

चरण 2: प्रसंग:
निबन्ध के आरम्भ में लेखक खिले हुए अशोक को देखकर उदास होने का कारण बता रहे हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि उदासी किस कारण से नहीं है।

चरण 3: शब्दार्थ:
हतभाग्य: अभागा। दूरदर्शी: दूर तक सोचने वाला। मुहूर्त: क्षण, समय।

चरण 4: व्याख्या:
पहले रेखांकित अंश में लेखक कहते हैं कि अशोक को देखकर उनकी उदासी इस कारण नहीं है कि उन्हें सुंदर वस्तुओं को अभागा मानने में आनंद आता है। दूसरे अंश में वे कहते हैं कि कुछ दूरदर्शी लोग सामने आई हर वस्तु के जीवन के अंतिम क्षण तक का हिसाब लगा लेते हैं। लेखक की दृष्टि इतनी दूर तक नहीं देखती। फिर भी फूल को देखकर उनका मन उदास हो जाता है। इसका कारण कुछ और है, जिसे वे आगे बताते हैं।

निष्कर्ष:
लेखक की उदासी सहज मानवीय संवेदना से उपजी है, किसी निराशावादी सोच से नहीं।

3(iii). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती है फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(iii) इस गद्यांश के लेखक ने स्वयं के विषय में क्या कहा है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि इस अंश में लेखक ने अपने बारे में क्या बताया है। उत्तर गद्यांश की पंक्तियों से ही देना है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
लेखक ने अपने विषय में तीन बातें कही हैं। पहली, उसे सुन्दर वस्तुओं को अभागा समझने में कोई विशेष आनन्द नहीं मिलता। दूसरी, उसकी दृष्टि दूरदर्शी लोगों की तरह इतनी दूर तक नहीं जाती कि वह वस्तु के जीवन के अन्त तक का हिसाब लगा ले। तीसरी, फिर भी खिले हुए अशोक को देखकर उसका मन उदास हो जाता है।

अंतिम उत्तर:
लेखक के अनुसार वह दूरदर्शी नहीं है और सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य कहने का शौकीन भी नहीं है, फिर भी अशोक के फूल को देखकर उसका मन उदास हो जाता है।

3(iv). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती है फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(iv) लेखक ने किस प्रकार गद्यांश के उद्देश्य को स्पष्ट करने की बात कही है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न यह जानना चाहता है कि लेखक गद्यांश के उद्देश्य को यानी अपनी उदासी के कारण को किस तरह स्पष्ट करने की बात कहता है।

चरण 2: गद्यांश के अनुसार:
लेखक कहता है कि उसकी उदासी का असली कारण तो अन्तर्यामी अर्थात् ईश्वर ही जानते होंगे। फिर भी वह स्वयं कुछ थोड़ा-सा अनुमान लगा सकता है। इसलिए वह उसी अनुमान के आधार पर अपनी उदासी का कारण आगे समझाने की बात कहता है।

अंतिम उत्तर:
लेखक ने अपने अनुमान के सहारे, अपनी सीमित समझ के अनुसार, उदासी का कारण स्पष्ट करने की बात कही है।

3(v). *गद्यांश:* पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती है फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(v) 'अंतर्यामी' एवं 'दूरदर्शी' शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अंतर्यामी का अर्थ:
'अंतर्यामी' शब्द 'अन्तः' (भीतर) और 'यामी' (जाने वाला, नियन्त्रण करने वाला) से बना है। इसका अर्थ है सबके मन की बात जानने वाला, यानी ईश्वर।

चरण 2: दूरदर्शी का अर्थ:
'दूरदर्शी' शब्द 'दूर' और 'दर्शी' (देखने वाला) से बना है। इसका अर्थ है आगे आने वाले समय और परिणाम को पहले ही देख लेने वाला, दूर की सोचने वाला व्यक्ति।

अंतिम उत्तर:
अंतर्यामी: सबके हृदय की बात जानने वाला, ईश्वर। दूरदर्शी: दूर तक की बात सोचने-समझने वाला।

4(i). *पद्यांश:* मुझे फूल मत मारो
मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो
होकर मधु के मीत मदन, पटु तुम कटु गरल न गारो
मुझे विकलता तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो
बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर बारो,
लो यह मेरी चरण धूलि, उस रति के सिर पर धारो।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित महाकाव्य 'साकेत' के नवम सर्ग से लिया गया है। यह गीत उर्मिला की विरह-व्यथा को प्रकट करता है।

चरण 2: प्रसंग:
लक्ष्मण वन में श्रीराम के साथ हैं और उर्मिला अयोध्या के महल में अकेली है। वसन्त के मादक वातावरण में कामदेव उसे और सताता है। तब वह कामदेव को सम्बोधित करके उससे प्रार्थना करती है कि वह उस पर फूलों के बाण न चलाए।

अंतिम उत्तर:
सन्दर्भ: मैथिलीशरण गुप्त, 'साकेत' (नवम सर्ग), उर्मिला का कामदेव से विनय।

4(ii). *पद्यांश:* मुझे फूल मत मारो
मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो
होकर मधु के मीत मदन, पटु तुम कटु गरल न गारो
मुझे विकलता तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो
बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर बारो,
लो यह मेरी चरण धूलि, उस रति के सिर पर धारो।

(ii) 'होकर मधु के मीत मदन' पंक्ति में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अलंकार की पहचान:
'होकर मधु के मीत मदन' में अनुप्रास अलंकार है।

चरण 2: लक्षण:
जहाँ किसी वर्ण या वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होने पर वाक्य में सुन्दरता आती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

चरण 3: पंक्ति में प्रमाण:
इस पंक्ति में 'म' वर्ण की बार-बार आवृत्ति है: मधु, मीत, मदन। इसी आवृत्ति से पंक्ति में नाद-सौन्दर्य आ गया है।

अंतिम उत्तर:
अलंकार: अनुप्रास ('म' वर्ण की आवृत्ति)।

4(iii). *पद्यांश:* मुझे फूल मत मारो
मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो
होकर मधु के मीत मदन, पटु तुम कटु गरल न गारो
मुझे विकलता तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो
बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर बारो,
लो यह मेरी चरण धूलि, उस रति के सिर पर धारो।

(iii) पद्यांश में उर्मिला ने अपने सिंदूर बिन्दु को किसके समान बताया है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सम्बन्धित पंक्ति:
उर्मिला कहती है: बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।

चरण 2: तुलना:
उर्मिला ने अपने माथे के सिंदूर-बिन्दु को शिव के नेत्र (हरनेत्र) के समान बताया है।

चरण 3: कारण:
शिव के तीसरे नेत्र की अग्नि ने ही कामदेव को भस्म किया था। उर्मिला कहती है कि मेरा सिंदूर-बिन्दु भी वैसा ही तेजस्वी है, इसलिए हे कामदेव, इसे देखकर सावधान हो जाओ।

अंतिम उत्तर:
सिंदूर-बिन्दु की तुलना शिवजी के नेत्र (हरनेत्र) से की गई है।

4(iv). *पद्यांश:* मुझे फूल मत मारो
मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो
होकर मधु के मीत मदन, पटु तुम कटु गरल न गारो
मुझे विकलता तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो
बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर बारो,
लो यह मेरी चरण धूलि, उस रति के सिर पर धारो।

(iv) "मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो" पंक्ति में कौन-सा रस प्रयुक्त है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रस का नाम:
इस पंक्ति में वियोग श्रृंगार रस है। इसे विप्रलम्भ श्रृंगार भी कहते हैं।

चरण 2: परिभाषा:
जहाँ नायक और नायिका के प्रेम का वर्णन हो और उनके मिलन के अभाव, यानी वियोग का चित्रण हो, वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता है।

चरण 3: पंक्ति में प्रमाण:
स्थायी भाव रति है। आश्रय उर्मिला है और आलम्बन उसके पति लक्ष्मण हैं। उद्दीपन वसन्त और कामदेव के बाण हैं। 'मैं अबला बाला वियोगिनी' शब्दों से पति से बिछुड़ने की पीड़ा प्रकट होती है।

अंतिम उत्तर:
वियोग श्रृंगार रस।

4(v). *पद्यांश:* मुझे फूल मत मारो
मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो
होकर मधु के मीत मदन, पटु तुम कटु गरल न गारो
मुझे विकलता तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो
बल हो तो सिंदूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर बारो,
लो यह मेरी चरण धूलि, उस रति के सिर पर धारो।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य 'साकेत' के नवम सर्ग से लिया गया है। इसमें विरहिणी उर्मिला कामदेव को सम्बोधित करती है।

चरण 2: शब्दार्थ:
हरनेत्र: शिव का नेत्र। निहारो: देखो। रूप-दर्प: सुन्दरता का अभिमान। कंदर्प: कामदेव। बारो: न्योछावर कर दो। धारो: रखो।

चरण 3: व्याख्या:
उर्मिला कहती है: हे कामदेव, यदि तुममें बल है, तो मेरे इस सिंदूर-बिन्दु को देखो। यह शिव के उस नेत्र के समान है, जिसने तुम्हें जलाकर भस्म किया था। तुम्हें अपने रूप का बड़ा अभिमान है, तो उसे मेरे पति लक्ष्मण पर न्योछावर कर दो, क्योंकि उनके सामने तुम्हारा रूप कुछ नहीं है। लो, यह मेरी चरण-धूलि है, इसे अपनी पत्नी रति के सिर पर रखो।

चरण 4: निष्कर्ष:
इन पंक्तियों में उर्मिला का पति-प्रेम, तेज और आत्मविश्वास प्रकट होता है। भाषा सरल और प्रभावशाली है।

OR

4(i). *पद्यांश:* दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश की पहचान:
ये पंक्तियाँ 'श्रद्धा-मनु' पाठ से ली गई हैं। यह पाठ महाकाव्य 'कामायनी' का अंश है।

चरण 2: कवि और कविता:
कवि का नाम: जयशंकर प्रसाद।
कविता का नाम: श्रद्धा-मनु (महाकाव्य 'कामायनी' का अंश)।

अंतिम उत्तर:
कवि जयशंकर प्रसाद हैं और कविता 'श्रद्धा-मनु' (कामायनी) है।

4(ii). *पद्यांश:* दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश का प्रसंग लिखिये।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के अंश 'श्रद्धा-मनु' से लिया गया है।

चरण 2: प्रसंग:
जल-प्रलय के बाद मनु अकेले बच जाते हैं और चिन्ता तथा निराशा से भर जाते हैं। उन्हें अपना जीवन दुःख और अभिशाप लगने लगता है। उसी समय श्रद्धा उनके पास आती है। वह मनु को समझाती है कि दुःख के बाद सुख अवश्य आता है। इन पंक्तियों में श्रद्धा यही आशा और प्रेरणा देती है।

निष्कर्ष:
इस प्रसंग का उद्देश्य निराश मनु के मन में जीवन के प्रति नया उत्साह जगाना है।

4(iii). *पद्यांश:* दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:
रजनी = रात। पिछली रजनी = रात का अन्तिम भाग। विकसता = खिलता हुआ। नवल = नया। प्रभात = सवेरा।

चरण 2: भावार्थ:
श्रद्धा मनु से कहती है कि दुःख की काली रात जब समाप्त होने को होती है, तभी सुख

का नया सवेरा खिलने लगता है। जैसे हर रात के बाद सुबह होती है, वैसे ही हर दुःख के बाद सुख आता है। इसलिए दुःख से घबराना नहीं चाहिए।

चरण 3: विशेष:
दुःख को रात और सुख को प्रभात कहा गया है, इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है। भाषा तत्सम शब्दों वाली, सरल और भावपूर्ण है।

निष्कर्ष:
कवि का आशय है कि दुःख जीवन का अन्त नहीं, सुख के आगमन की सूचना है।

4(iv). *पद्यांश:* दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।

(iv) श्रद्धा किसके हताश मन को प्रेरणा दे रही है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: उत्तर का आधार:
पद्यांश में श्रद्धा दुःख के बाद सुख आने की बात कहकर किसी को समझा रही है। यह प्रसंग 'कामायनी' का है।

चरण 2: उत्तर:
श्रद्धा मनु के हताश मन को प्रेरणा दे रही है। प्रलय के बाद अकेले पड़े मनु निराश थे। श्रद्धा उन्हें बताती है कि दुःख के बाद सुख अवश्य आता है, इसलिए उन्हें निराश नहीं होना चाहिए।

अंतिम उत्तर:
श्रद्धा मनु के हताश मन को प्रेरणा दे रही है।

4(v). *पद्यांश:* दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।

(v) 'एक परदा यह झीना नील' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अलंकार का नाम:
'एक परदा यह झीना नील' पंक्ति में रूपक अलंकार है।

चरण 2: रूपक की पहचान:
जहाँ उपमेय और उपमान में अभेद बताया जाए, यानी उपमेय को ही उपमान कह दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

चरण 3: पंक्ति में कारण:
यहाँ दुःख (उपमेय) को झीना नीला परदा (उपमान) ही कह दिया गया है। इसका अर्थ है कि दुःख एक पतला परदा है, जिसके पीछे सुख छिपा है। दोनों में कोई भेद नहीं रखा गया, इसलिए रूपक अलंकार है।

अंतिम उत्तर:
रूपक अलंकार।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **वासुदेवशरण अग्रवाल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म 1904 ई० में मेरठ (उत्तर प्रदेश) के खेड़ा ग्राम में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से उन्होंने पी-एच०डी० और डी०लिट्० की उपाधियाँ पाईं। वे पुरातत्त्व, कला और संस्कृति के प्रकांड विद्वान थे। उनकी भाषा शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ और शैली गंभीर विचारात्मक है। सन् 1967 ई० में उनका निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:
पृथिवीपुत्र, कल्पवृक्ष, कला और संस्कृति, भारत की मौलिक एकता, कादम्बरी: एक सांस्कृतिक अध्ययन, हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन, पाणिनिकालीन भारतवर्ष।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. वे मथुरा संग्रहालय के अधीक्षक, दिल्ली के केन्द्रीय एशियाई पुरावस्तु संग्रहालय के अध्यक्ष और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला एवं वास्तु विभाग के अध्यक्ष रहे।
2. मलिक मुहम्मद जायसी के 'पद्मावत' की संजीवनी व्याख्या तथा 'उरु-ज्योति' और 'वाग्वैदग्ध्य' भी उनकी देन हैं।
3. पाठ्यपुस्तक का निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' उनके संग्रह 'पृथिवीपुत्र' से लिया गया है।

निष्कर्ष:
अग्रवाल जी ने भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व को हिन्दी गद्य में सरल रूप से प्रस्तुत किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 1907 ई० में बलिया (उत्तर प्रदेश) के आरत दुबे का छपरा गाँव में हुआ। उन्होंने शान्तिनिकेतन और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में

अध्यापन किया। उनके निबन्धों में पाण्डित्य के साथ सरसता है। भाषा तत्सम-प्रधान है और शैली विचारात्मक, व्यंग्यात्मक तथा भावात्मक। 1979 ई० में उनका निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:
अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. उन्हें 1957 ई० में पद्म भूषण मिला। 'आलोक पर्व' पर 1973 ई० में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।
2. उपन्यास: बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा।
3. आलोचना और इतिहास: हिन्दी साहित्य का आदिकाल, सूर साहित्य, नाथ सम्प्रदाय।
4. ललित निबन्ध की परम्परा को उन्होंने नई ऊँचाई दी।

निष्कर्ष:
द्विवेदी जी विद्वत्ता और लालित्य के अनूठे संगम वाले साहित्यकार हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **प्रो० जी० सुंदर रेड्डी**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का जन्म सन् 1919 ई० में आन्ध्र प्रदेश में हुआ। संस्कृत और तेलुगु का ज्ञान इन्हें आरम्भ में ही मिला, उच्च शिक्षा हिन्दी में हुई। ये आन्ध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। इन्होंने हिन्दी और तेलुगु साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके दोनों भाषाओं को निकट लाने का कार्य किया। इनकी शैली विचारप्रधान और सरल है।

प्रमुख रचनाएँ: साहित्य और समाज, मेरे विचार, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य, वैचारिकी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. ये हिन्दी भाषी और दक्षिण भारतीय क्षेत्रों के बीच साहित्यिक सेतु माने जाते हैं।
2. इनके निबन्धों में भाषा, साहित्य, समाज और राष्ट्रीय एकता जैसे विषय मिलते हैं।
3. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त, गम्भीर और शुद्ध है, शैली विवेचनात्मक है।
4. अन्य कृतियाँ: हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, शोध और बोध।

निष्कर्ष:
प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हिन्दी के विद्वान समीक्षक और निबन्धकार थे, जिन्होंने उत्तर-दक्षिण की भाषाओं को जोड़ने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **जयशंकर प्रसाद**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई० में वाराणसी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहू' परिवार में हुआ। घर पर ही उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और फारसी सीखी। वे छायावाद के प्रमुख स्तम्भ हैं। उनकी काव्य-भाषा तत्सम-प्रधान, भावपूर्ण और प्रतीकात्मक है। सन् 1937 ई० में उनका देहावसान हुआ।

चरण 2: प्रमुख कृतियाँ:
काव्य: कामायनी, आँसू, लहर, झरना। नाटक: स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। कहानी: आकाशदीप, आँधी। उपन्यास: कंकाल, तितली।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. 'कामायनी' छायावाद का प्रतिनिधि महाकाव्य है, जिस पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला।
2. उन्होंने नाटकों में भारत के गौरवशाली इतिहास को जीवित किया।
3. अन्य रचनाएँ: कानन-कुसुम, प्रेम-पथिक, महाराणा का महत्त्व, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ।

निष्कर्ष:
प्रसाद जी कवि, नाटककार, कथाकार और उपन्यासकार, चारों रूपों में हिन्दी के महान रचनाकार हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **मैथिलीशरण गुप्त**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई० में झाँसी के चिरगाँव में हुआ। महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से वे खड़ीबोली में काव्य-रचना करने लगे। राष्ट्रीय भावना और नारी के प्रति उदार दृष्टि उनके काव्य की विशेषता है। इसी कारण वे 'राष्ट्रकवि' कहलाए। सन् 1964 ई० में उनका निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख कृतियाँ:
भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, जयद्रथ-वध, पंचवटी, द्वापर, नहुष, किसान।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'साकेत' रामकथा पर आधारित महाकाव्य है, जिसमें उर्मिला के त्याग को विशेष स्थान मिला है।
2. 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध की पत्नी की व्यथा का चित्रण है।
3. उन्हें पद्म भूषण मिला और वे राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

4. ‘भारत-भारती’ ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय राष्ट्रीय जागरण का काम किया।

निष्कर्ष:
गुप्त जी द्विवेदी युग के सबसे लोकप्रिय कवि हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **रामधारी सिंह 'दिनकर'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
रामधारी सिंह ‘दिनकर’ का जन्म 1908 ई० में बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ। पटना विश्वविद्यालय से बी०ए० करके वे अध्यापक, सरकारी अधिकारी और बाद में राज्यसभा सदस्य रहे। उनकी कविता में ओज, राष्ट्रप्रेम और क्रान्ति का स्वर है। वे राष्ट्रकवि कहलाते हैं। 1974 ई० में उनका निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख कृतियाँ:
रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, संस्कृति के चार अध्याय (गद्य)।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. ‘उर्वशी’ पर उन्हें 1972 ई० में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
2. ‘संस्कृति के चार अध्याय’ पर 1959 ई० में साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उसी वर्ष पद्म भूषण प्राप्त हुआ।
3. ‘रश्मिरथी’ कर्ण के जीवन पर और ‘कुरुक्षेत्र’ युद्ध की समस्या पर आधारित प्रबन्ध काव्य है।

निष्कर्ष:
दिनकर जी वीर रस और राष्ट्रीय चेतना के अमर कवि हैं।

6. 'ध्रुवयात्रा' अथवा 'बहादुर' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में दो कहानियों में से एक का उद्देश्य पूछा गया है। इस पृष्ठ पर 'ध्रुवयात्रा' (जैनेन्द्र कुमार) का उत्तर दिया गया है।

चरण 2: उद्देश्य (80 शब्दों में):
'ध्रुवयात्रा' का उद्देश्य प्रेम की पवित्रता और श्रेष्ठता को स्थापित करना है। जैनेन्द्र कुमार दिखाते हैं कि प्रेम विवाह के सामाजिक बन्धन से बड़ा है। उर्मिला रिपुदमन को व्यक्तिगत सुख छोड़कर बड़े लक्ष्य के लिए प्रेरित करती है। कहानी त्याग, आत्मबलिदान और आदर्श की भावना को उभारती है तथा प्रेम और कर्तव्य के द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक चित्र देती है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
रिपुदमन उत्तरी ध्रुव जीतकर लौटता है और उर्मिला उसे दक्षिणी ध्रुव जाने को कहती है। कहानी का अन्त रिपुदमन के आत्मबलिदान से होता है।

निष्कर्ष:
कहानी प्रेम को सर्वोच्च मानती है और त्याग का सन्देश देती है।

OR

'पंचलाइट' अथवा 'लाटी' कहानी का सारांश लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में 'पंचलाइट' या 'लाटी' में से एक का सारांश माँगा गया है। इस पृष्ठ पर फणीश्वरनाथ रेणु की 'पंचलाइट' का सारांश दिया गया है।

चरण 2: सारांश (80 शब्दों में):
रेणु की 'पंचलाइट' में महतो टोली के पंच जुर्माने के पैसे जोड़कर रामनवमी के मेले से पेट्रोमैक्स खरीदते हैं। टोली में कोई उसे जलाना नहीं जानता और दूसरी टोली के लोग हँसी उड़ाते हैं। तब मुनरी सहेली कनेली से कहलवाती है कि गोधन जलाना जानता है। पंच गोधन का दण्ड माफ करके उसका हुक्का-पानी चालू कर देते हैं। गोधन पंचलाइट जला देता है और टोली की इज्जत बच जाती है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
गोधन और मुनरी एक-दूसरे को चाहते थे, इसलिए गोधन जाति-पंचायत से दण्डित था। कहानी में आंचलिक भाषा और ग्रामीण जीवन का सजीव चित्र है। यह कहानी संग्रह 'ठुमरी' में संकलित है।

निष्कर्ष:
कहानी बताती है कि आवश्यकता पड़ने पर गाँव का समाज भी अपनी कठोरता छोड़ देता है।

7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
सुमित्रानन्दन पन्त कृत 'मुक्तियज्ञ' गांधी-युग के स्वतन्त्रता-संघर्ष का काव्य है। इसके नायक महात्मा गांधी हैं और सारी कथा उन्हीं के नेतृत्व में आगे बढ़ती है।

चरण 2: चरित्रगत विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: देश में हिंसा फैलने पर भी वे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर अटल रहते हैं।
2. दृढ़-प्रतिज्ञ: दाण्डी-यात्रा में वे चौबीस दिन पैदल चलकर समुद्र-तट पर नमक-कानून तोड़ते हैं। कोई बाधा उन्हें रोक नहीं पाती।
3. जन-नायक: जनता उनके एक संकेत पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहती है।
4. समदर्शी: वे सबको समान दृष्टि से देखते हैं और छुआछूत मिटाने का प्रयास करते हैं।
5. मानवता के पोषक: उनका विश्वास है कि घृणा प्रेम से ही मिटती है।

निष्कर्ष:
गांधीजी सत्य, प्रेम, त्याग और दृढ़ता के मूर्त रूप हैं। पन्त जी ने उन्हें युग-प्रवर्तक महामानव के रूप में चित्रित किया है।

OR

'मुक्तियज्ञ' के कथानक का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का स्वरूप:
'मुक्तियज्ञ' सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है। इसमें गांधी-युग की उन घटनाओं का वर्णन है जिनसे भारत स्वतन्त्र हुआ।

चरण 2: संक्षिप्त कथानक:
काव्य में देश की पराधीनता से मुक्ति के लिए चले संघर्ष का क्रम है। सबसे पहले

नमक-कानून के विरोध में गांधीजी साबरमती आश्रम से दाण्डी तक चौबीस दिन की यात्रा करके समुद्र-तट पर नमक बनाते हैं। इसके बाद देशभर में जन-आन्दोलन फैलता है, जेलें सत्याग्रहियों से भर जाती हैं और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार होता है।
साइमन कमीशन का पूरे देश में विरोध होता है। सन् 1942 में गांधीजी 'भारत छोड़ो' का नारा देते हैं और पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग करते हैं। सुभाषचन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द सेना के गठन का भी उल्लेख आता है।
अन्त में सन् 1947 में देश स्वतन्त्र होता है, किन्तु अंग्रेज उसे भारत और पाकिस्तान में बाँट जाते हैं। हिंसा से दुःखी गांधीजी अनशन करके सत्य, अहिंसा और साम्प्रदायिक एकता का सन्देश देते हैं।

निष्कर्ष:
यह कथा सत्य और अहिंसा के बल पर मिली स्वतन्त्रता की गाथा है।

7(b). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'हर्षवर्द्धन' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' के खण्डकाव्य 'त्यागपथी' का नायक थानेश्वर-नरेश हर्षवर्द्धन है। कवि ने इतिहास की घटनाओं से उसे एक आदर्श पुत्र, भाई और महान् त्यागी शासक के रूप में गढ़ा है।

चरण 2: हर्षवर्द्धन के चरित्र की विशेषताएँ:
1. आदर्श पुत्र: पिता प्रभाकरवर्द्धन के रोगी होने का समाचार पाते ही वह आखेट छोड़कर लौट आता है और सेवा में लग जाता है।
2. आदर्श भाई: बड़े भाई राज्यवर्द्धन की हत्या के बाद वह बहन राज्यश्री को खोजने वन में जाता है और उसे आत्मदाह से बचा लेता है।

3. वीर योद्धा: वह शत्रुओं को हराकर कन्नौज पर अधिकार करता है और कश्मीर, पंजाब, मिथिला आदि को जीतता है।
4. देश-प्रेमी: वह छोटे-छोटे राज्यों को जोड़कर एक विशाल राष्ट्र बनाता है। उसका उद्देश्य अपना राज्य बढ़ाना नहीं, देश को एक करना है।
5. महान् त्यागी और दानी: राजकोष को वह प्रजा की सम्पत्ति मानता है। प्रयाग में सर्वस्व दान करके बहन से माँगकर वस्त्र पहनता है।

चरण 3: निष्कर्ष:
इस प्रकार हर्षवर्द्धन वीर, न्यायप्रिय, धर्मपरायण और त्याग की साक्षात् मूर्ति है। 'त्यागपथी' नाम उसके चरित्र पर पूरी तरह ठीक बैठता है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'पंचम सर्ग' की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सर्ग का स्थान:
'त्यागपथी' खण्डकाव्य पाँच सर्गों में है। पंचम सर्ग अन्तिम सर्ग है और इसमें हर्षवर्द्धन के त्याग की चरम स्थिति दिखाई गई है।

चरण 2: पंचम सर्ग की कथा:
हर्षवर्द्धन एक आदर्श राजा के रूप में शासन करता है। वह सदा जन-कल्याण और शास्त्र-चिन्तन में लगा रहता है। उसके राज्य में प्रजा सुखी है और विद्वानों का सम्मान होता है।
राजा हर्ष प्रयाग में महादान का आयोजन करता है। वह अपना सारा राजकोष दीन-दुखियों, विद्वानों और धार्मिक संस्थाओं को दान कर देता है।
सब कुछ बाँटने के बाद वह अपने लिए कुछ नहीं रखता और वस्त्र भी बहन राज्यश्री से माँगकर पहनता है।
इस प्रकार के सर्वस्व-दान का आयोजन वह छह बार करता है। वह इसे प्रजा के ऋण

से मुक्ति कहता है।
हर्ष भारतीय संस्कृति का प्रसार भी करता है।

निष्कर्ष:
इस सर्ग में हर्ष सचमुच 'त्यागपथी' सिद्ध होता है, जो राज्य को भोग की वस्तु नहीं, प्रजा की धरोहर मानता है।

7(c). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर दुःशासन का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पात्र का परिचय:
द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी कृत 'सत्य की जीत' महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है। दुःशासन दुर्योधन का छोटा भाई और इस काव्य का प्रमुख खल पात्र है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. आज्ञाकारी पर अनैतिक: दुर्योधन के कहने पर वह भरी सभा में द्रौपदी को लाने चल पड़ता है, बिना उचित-अनुचित सोचे।
2. क्रूर और अभद्र: वह द्रौपदी के केश खींचकर उसे सभा में लाता है। स्त्री का सम्मान उसे नहीं आता।
3. अहंकारी: राजकुमार होने के मद में वह बड़ों और विद्वानों की उपस्थिति में भी मर्यादा भूल जाता है।
4. शक्ति का पुजारी: वह शस्त्र-बल को ही सत्य मानता है। नारी को दुर्बल समझकर उसका तिरस्कार करता है।
5. अन्त में पराजित: द्रौपदी को निर्वस्त्र करने के लिए हाथ बढ़ाता है, पर द्रौपदी के तेज के आगे काँप उठता है और असमर्थ हो जाता है।

निष्कर्ष:

दुःशासन पशुबल, अहंकार और अन्याय का प्रतीक है, जिसकी हार सत्य की जीत बनती है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: आधार:
द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी का 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है।

चरण 2: कथावस्तु:
दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिए बुलाता है। कौरव छल से खेलते हैं और युधिष्ठिर राज्य, भाइयों और स्वयं को हार जाते हैं। अन्त में वे द्रौपदी को भी दाँव पर लगाकर हार जाते हैं।
दुर्योधन दुःशासन को आदेश देता है कि द्रौपदी को भरी सभा में लाओ। दुःशासन उसके केश खींचते हुए उसे सभा में ले आता है।
द्रौपदी निर्भय होकर प्रश्न करती है कि जो अपने को हार चुका, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था। विकर्ण उसका समर्थन करता है और भीष्म उदास हो जाते हैं।
दुःशासन उसे निर्वस्त्र करने बढ़ता है, पर द्रौपदी दुर्गा-सी तेजस्वी दिखती है और वह काँपकर असमर्थ हो जाता है। भीम की भुजाएँ फड़क उठती हैं।
अन्त में धृतराष्ट्र पाण्डवों को मुक्त करके उनका राज्य लौटा देते हैं।

निष्कर्ष:
कथा का सार है कि असत्य कितना भी बलवान् हो, अन्त में सत्य की ही जीत होती है।

7(d). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिये। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सर्ग का विषय:
गुलाब खण्डेलवाल के खण्डकाव्य 'आलोकवृत्त' के द्वितीय सर्ग में गाँधी जी के प्रारम्भिक जीवन का विकास दिखाया गया है।

चरण 2: कथावस्तु:
बचपन में गाँधी जी कुसंगति में पड़ जाते हैं। वे अपने को शक्तिशाली बनाने की सोच से चोरी-छिपे मांस खाते हैं और इसके लिए झूठ बोलते हैं। पर उनका मन भीतर से पश्चात्ताप करता है।
वे अपनी भूलें पिता के सामने स्वीकार करते हैं और बुरी आदतें छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं।
कस्तूरबा से उनका विवाह होता है। कुछ समय बाद पिता का देहान्त हो जाता है। उच्च शिक्षा के लिए वे इंग्लैंड जाते हैं। माता ने जाने से पहले उन्हें मद्य, मांस और परस्त्री से दूर रहने की शपथ दिलाई थी। वहाँ वे संयम और सात्त्विक जीवन बिताते हैं। बैरिस्टर बनकर भारत लौटने पर उन्हें माता के देहान्त का दुःखद समाचार मिलता है।

निष्कर्ष:
यह सर्ग बताता है कि भूल स्वीकार करने और संकल्प पर टिके रहने से साधारण बालक भी महान् बनता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के रचयिता गुलाब खण्डेलवाल हैं। इसके नायक महात्मा गाँधी हैं। इसमें उनके जन्म से लेकर देश की स्वतन्त्रता तक के जीवन का वर्णन आठ सर्गों में है।

चरण 2: गाँधीजी की चारित्रिक विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: गाँधीजी हर संघर्ष में सत्य और अहिंसा को अपना अस्त्र बनाते हैं। वे पशुबल के सामने आत्मा की शक्ति जगाने की बात कहते हैं।
2. देशप्रेमी: उन्होंने अपना तन, मन और जीवन देश की स्वतन्त्रता के लिए लगा दिया। असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और सन् 1942 का आन्दोलन इसके प्रमाण हैं।
3. दृढ़ आत्मविश्वासी: उनका विश्वास है कि शासित की स्वीकृति के बिना शासक कुछ नहीं कर सकता। इसी बल पर वे अंग्रेज़ी शासन से टकराते हैं।
4. मानवतावादी: वे सारी मानवता को एक मानते हैं। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का विरोध उनकी इसी भावना का फल है।
5. धीरोदात्त नायक: उनमें मानवीय दुर्बलताएँ हैं, पर ईमानदारी, सरलता और लगन से वे उन पर विजय पा लेते हैं। उनमें दम्भ या पाखण्ड नहीं है।

निष्कर्ष:
इस प्रकार 'आलोकवृत्त' में गाँधीजी सत्यनिष्ठ, अहिंसक, देशभक्त और मानवता के प्रेमी धीरोदात्त नायक के रूप में चित्रित हैं।

7(e). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'संदेश सर्ग' का सारांश लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सर्ग का परिचय:
'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के रचयिता डॉ. शिवबालक शुक्ल हैं। 'संदेश' इसका छठा सर्ग है और कथा का अत्यन्त मार्मिक भाग माना जाता है।

चरण 2: संदेश सर्ग की कथा:
आश्रम में श्रवण के अन्धे माता-पिता पुत्र की प्रतीक्षा में व्याकुल हैं। श्रवण को जल लेकर लौटने में देर हो चुकी है। तभी राजा दशरथ जल लेकर आश्रम पहुँचते हैं।
वे अपना परिचय अजपुत्र (अज के पुत्र) दशरथ के रूप में देते हैं। फिर वे काँपते स्वर में बताते हैं कि अनजाने में शब्दभेदी बाण से उनके पुत्र का वध हो गया है।
यह समाचार सुनकर माता-पिता शोक से विह्वल हो उठते हैं। वे विलाप करते हैं और पुत्र के पास ले चलने को कहते हैं। सरयू-तट पर पहुँचकर वे पुत्र के शव को छूते हैं और मूर्च्छित हो जाते हैं।

निष्कर्ष:
इस सर्ग में दशरथ का पश्चात्ताप और माता-पिता का करुण विलाप दिखाया गया है। आगे के सर्ग में इसी शोक से शाप की घटना जन्म लेती है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
डॉ. शिवबालक शुक्ल-रचित 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार हैं। वे अन्धे माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र और आदर्श सेवक हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. मातृ-पितृ भक्त: श्रवण दिन-रात अपने अन्धे माता-पिता की सेवा में लगे रहते हैं। वे उन्हें काँवर में बैठाकर तीर्थयात्रा कराते हैं। मरते समय भी उन्हें बाण की पीड़ा से

अधिक माता-पिता के भविष्य की चिन्ता है।
2. सत्यवादी: मृत्यु के समय दशरथ के पूछने पर वे अपना सच्चा परिचय देते हैं कि पिता वैश्य और माता शूद्रा थीं।
3. सन्तोषी और तपस्वी: वल्कल वस्त्र और वन के फल उनके लिए काफी हैं। भोग-ऐश्वर्य उन्हें छू नहीं पाता।
4. क्षमाशील और उदार: दशरथ पर वे क्रोध नहीं करते।
5. धर्मपरायण: वे धर्म के गुणों को जीवन में अपनाने वाले संस्कारी युवक हैं।

निष्कर्ष:
श्रवणकुमार त्याग, सेवा और सत्य की मूर्ति हैं। उनका चरित्र हर पुत्र के लिए प्रेरणा है।

7(f). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' के खण्डकाव्य 'रश्मिरथी' में सात सर्ग हैं। इसके नायक कर्ण हैं। कवि ने उन्हें महाभारत के पात्र से ऊपर उठाकर एक महामानव के रूप में दिखाया है।

चरण 2: कर्ण के चरित्र की विशेषताएँ:
1. महान योद्धा: रंगभूमि में कर्ण अपनी धनुर्विद्या से अर्जुन जैसे वीरों को चकित कर देता है।
2. स्वाभिमानी: सूतपुत्र कहकर अपमान होने पर भी वह अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखता है। जन्म नहीं, कर्म को वह महत्त्व देता है।
3. महादानी: इन्द्र छल से कवच और कुण्डल माँगते हैं। कर्ण सब समझकर भी उन्हें दान कर देता है।
4. मित्र-निष्ठ: दुर्योधन ने उसे अंगदेश का राजा बनाया था। कृष्ण और कुन्ती के

प्रलोभनों के बाद भी कर्ण उसका साथ नहीं छोड़ता।
5. सत्यवादी और गुरुभक्त: वह परशुराम से अपनी जाति छिपाता है, पर कष्ट सहकर गुरु की सेवा करता है।
6. मातृ-सम्मान: कुन्ती को वह वचन देता है कि अर्जुन के अतिरिक्त चारों पुत्र सुरक्षित रहेंगे।

निष्कर्ष:
कर्ण वीर, दानी, स्वाभिमानी और मित्र-धर्म का पालक है। उसका जीवन दुख से भरा है, फिर भी वह श्रेष्ठ मानव-मूल्यों का प्रतीक बनकर उभरता है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का सात सर्गों वाला खण्डकाव्य है। इसकी कथा महाभारत के वीर कर्ण के जीवन पर आधारित है।

चरण 2: सर्गवार कथावस्तु:
प्रथम सर्ग: रंगभूमि में कर्ण अपनी अस्त्र-कला दिखाकर अर्जुन को चुनौती देता है। कृपाचार्य उसे सूतपुत्र कहकर रोकते हैं, तब दुर्योधन उसे अंगदेश का राजा बना देता है।
द्वितीय सर्ग: कर्ण ब्राह्मण बनकर परशुराम से शिक्षा पाता है। सत्य खुलने पर गुरु उसे शाप देते हैं कि निर्णायक समय पर वह विद्या भूल जाएगा।
तृतीय सर्ग: कृष्ण पाण्डवों के दूत बनकर सन्धि कराने जाते हैं। दुर्योधन नहीं मानता। कृष्ण कर्ण को उसके जन्म का रहस्य बताते हैं, पर वह मित्र का साथ नहीं छोड़ता।
चतुर्थ सर्ग: इन्द्र ब्राह्मण के वेश में कवच-कुण्डल माँगते हैं और कर्ण उन्हें दान कर देता है।

पंचम सर्ग: कुन्ती कर्ण से अपना पक्ष छोड़ने को कहती है। कर्ण मना कर देता है, पर अर्जुन को छोड़ शेष चार पुत्रों को न मारने का वचन देता है।
षष्ठ सर्ग: कर्ण सेनापति बनता है। युद्ध में वह अपना वचन निभाता है।
सप्तम सर्ग: अर्जुन के साथ अन्तिम युद्ध में कर्ण का रथ-चक्र धँस जाता है और वह वीरगति पाता है।

निष्कर्ष:
कथा का केन्द्र कर्ण का त्याग, शौर्य और मित्र-धर्म है।

8(a). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम् । तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते । किं बहुना चरित्र निर्माणार्थं यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति न तादृशीं किञ्चिदन्यत् । मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते, नान्यत्र तादृशी । दया, दानं, शौचं, औदार्यम्, अनसूया, क्षमा अन्ये चानेके गुणा अस्य साहित्यस्य अनुशीलनेन सञ्जायन्ते ।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से लिया गया है। इसमें संस्कृत भाषा और उसके साहित्य की विशेषताएँ बताई गई हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:
सरसम् = रस से भरा, आनन्ददायक। सुनिश्चितम् = भली-भाँति निर्धारित। लालित्यम् = सुन्दरता, कोमलता। श्रुतिमाधुर्यम् = सुनने में मधुरता। सत्प्रेरणा = अच्छी प्रेरणा। शौचम् = पवित्रता। औदार्यम् = उदारता। अनुशीलनेन = निरन्तर अध्ययन से।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

संस्कृत का साहित्य सरस है और उसका व्याकरण सुनिश्चित है। उसके गद्य और पद्य में सुन्दरता है, भावों को समझाने की शक्ति है और अनुपम कर्ण-मधुरता भी है। अधिक क्या कहें, चरित्र-निर्माण के लिए जैसी श्रेष्ठ प्रेरणा संस्कृत साहित्य देता है, वैसी कोई दूसरा साहित्य नहीं देता। मूल मानवीय गुणों का जैसा विवेचन संस्कृत साहित्य में है, वैसा अन्यत्र नहीं है। दया, दान, पवित्रता, उदारता, अनसूया (दोष न देखने का भाव), क्षमा तथा और भी अनेक गुण इस साहित्य के अध्ययन से उत्पन्न होते हैं।

निष्कर्ष:
संस्कृत साहित्य केवल सुन्दर ही नहीं है, वह मनुष्य के चरित्र को गढ़ने वाले गुण भी सिखाता है।

OR

दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता पटुः पत्रकारश्चासीत् । परमस्य सर्वोच्चं गुणः, जनसेवैव आसीत् । यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत् । प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत् । अद्यास्माकं जनान् सन्मार्गं दर्शयन् स्थाने-स्थाने, जने-जने उपस्थित एव ।
जयन्ति ते महाभागा जनसेवा परायणाः ।
जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित् ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश संस्कृत दिग्दर्शिका के पाठ 'महामना मालवीयः' से लिया गया है। इसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदनमोहन मालवीय जी के गुणों का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:
महामनाः = महान् हृदय वाले। पटुः = कुशल। जनसेवा = लोगों की सेवा। पीड्यमानान् = पीड़ित होते हुओं को। साहाय्यम् = सहायता। सन्मार्गम् = अच्छा मार्ग।

जरामृत्युभयम् = बुढ़ापे और मृत्यु का डर। कीर्तितनुः = यशरूपी शरीर।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
महामना मालवीय जी विद्वान्, वक्ता, धार्मिक नेता और कुशल पत्रकार थे। उनका सबसे ऊँचा गुण जनसेवा ही था। जहाँ कहीं वे लोगों को दुखी और पीड़ित देखते थे, वहीं शीघ्र पहुँच जाते थे और हर प्रकार की सहायता करते थे। प्राणियों की सेवा उनका स्वभाव ही था। आज भी हमारे लोगों को अच्छा मार्ग दिखाते हुए वे स्थान-स्थान पर और जन-जन के बीच उपस्थित ही हैं।
श्लोक का अनुवाद: वे महान भाग्यशाली जनसेवा में लगे लोग विजयी होते हैं, जिनके यशरूपी शरीर को कहीं भी बुढ़ापे और मृत्यु का भय नहीं होता।

निष्कर्ष:
जनसेवा करने वाले महापुरुष अपने यश के रूप में सदा जीवित रहते हैं।

8(b). दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। इसमें विद्या पाने वाले विद्यार्थी के लिए सुख की चिन्ता छोड़कर परिश्रम करने का उपदेश दिया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
सुखार्थिनः = सुख चाहने वाले का। कुतः = कहाँ से। विद्या = ज्ञान। विद्यार्थिनः = विद्या चाहने वाले का। त्यजेत् = छोड़ दे। वा = अथवा।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
जो सुख चाहता है, उसे विद्या कहाँ से मिलेगी? और जो विद्या चाहता है, उसे सुख कहाँ से मिलेगा?
इसलिए सुख चाहने वाला विद्या का विचार छोड़ दे, अथवा विद्या चाहने वाला सुख का मोह छोड़ दे।

चरण 4: भावार्थ:
विद्या कठोर परिश्रम, अनुशासन और त्याग से मिलती है। आराम और आलस्य के साथ उसे पाना सम्भव नहीं है। सच्चे विद्यार्थी को सुख-सुविधा की इच्छा त्यागनी पड़ती है।

निष्कर्ष:
यहाँ दिये गये श्लोकों में से श्लोक (सुखार्थिनः कुतो विद्या...) का ससन्दर्भ अनुवाद किया गया है।

OR

दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' में संकलित है। यह भर्तृहरि के 'नीतिशतक' का प्रसिद्ध श्लोक है। इसमें धैर्यवान पुरुषों के दृढ़ स्वभाव का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:

नीतिनिपुणाः = नीति में कुशल लोग। निन्दन्तु = निन्दा करें। स्तुवन्तु = प्रशंसा करें। लक्ष्मीः = धन-सम्पत्ति। समाविशतु = आ जाए। यथेष्टम् = इच्छानुसार। युगान्तरे = युगों बाद। न्याय्यात् पथः = न्याय के मार्ग से। धीराः = धैर्यशाली लोग।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
नीति जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें। धन-सम्पत्ति चाहे आ जाए या अपनी इच्छा से चली जाए। मृत्यु चाहे आज ही हो जाए या युगों के बाद हो।
फिर भी धैर्यशाली पुरुष न्याय के मार्ग से एक कदम भी इधर-उधर नहीं हटते।

चरण 4: भावार्थ:
सच्चा धीर पुरुष लोगों की निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि और जीवन-मरण की चिन्ता नहीं करता। वह हर स्थिति में सत्य और न्याय के पथ पर अडिग रहता है।

निष्कर्ष:
यहाँ श्लोक (निन्दन्तु नीतिनिपुणाः...) का ससन्दर्भ अनुवाद किया गया है।

9. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **कलई खुलना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
मुहावरा 'कलई खुलना' का अर्थ लिखकर वाक्य बनाना है।

चरण 2: अर्थ:
'कलई खुलना' का अर्थ है: पोल खुल जाना, छिपा हुआ दोष या झूठ सबके सामने आ जाना। बर्तन पर चढ़ी कलई उतर जाए तो असली धातु दिखने लगती है, उसी से यह मुहावरा बना है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
जब जाँच हुई तो नकली दवा बेचने वाले दुकानदार की कलई खुल गई।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: पोल खुलना, असलियत सामने आना। प्रयोग: ऊपर दिए गए वाक्य में।

OR

निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **मक्खन लगाना**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
मुहावरा 'मक्खन लगाना' का अर्थ बताकर उसका वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
'मक्खन लगाना' का अर्थ है: अपना काम निकालने के लिए किसी की झूठी या अधिक प्रशंसा करना, चापलूसी करना।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
कर्मचारी अफसर को मक्खन लगाकर छुट्टी मंजूर कराने की कोशिश कर रहा था।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: चापलूसी करना, खुशामद करना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में है।

OR

निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **पानी-पानी होना**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
मुहावरा 'पानी-पानी होना' का अर्थ लिखना और वाक्य बनाना है।

चरण 2: अर्थ:
'पानी-पानी होना' का अर्थ है: बहुत लज्जित होना, शर्म से गड़ जाना। अपनी गलती पकड़े जाने पर मनुष्य को जो शर्म आती है, उसे यह मुहावरा दिखाता है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
नकल करते पकड़े जाने पर छात्र सबके सामने पानी-पानी हो गया।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: अत्यंत शर्मिंदा होना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में है।

OR

निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **उल्टी गंगा बहाना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
मुहावरा 'उल्टी गंगा बहाना' का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
'उल्टी गंगा बहाना' का अर्थ है: प्रचलित नियम या रीति के विपरीत काम करना, अनहोनी या असंभव बात कर दिखाना। गंगा का उल्टी दिशा में बहना सामान्यतः संभव नहीं है, इसी से यह भाव बना है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:

जहाँ सब लोग आधुनिक खेती अपना रहे हैं, वहाँ रमेश पुरानी विधि से खेती करके उल्टी गंगा बहा रहा है।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: रीति के विरुद्ध कार्य करना, अनहोनी बात करना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में है।

10(i). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों परकीयों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय अथवा परकीयों द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(i) भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कमजोर होने का प्रमुख कारण क्या है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश का भाव:
गद्यांश कहता है कि आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधान हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने से बने हैं। इनमें कुछ रूढ़ियाँ हैं, कुछ परकीयों (विदेशियों) से संघर्ष की स्थिति में अपनाये गये उपाय हैं और कुछ परकीयों द्वारा थोपी गई या उनकी नकल से स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ हैं।

चरण 2: कारण की पहचान:
सांस्कृतिक चेतना कमजोर होने के पीछे दो बातें दिखती हैं। पहली, समय के अनुसार परिवर्तन और विकास की कमी, जिससे रूढ़ियाँ बन गईं। दूसरी, परकीयों के साथ संघर्ष और उनकी थोपी हुई व्यवस्थाओं का अनुकरण।

अंतिम उत्तर:

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कमजोर होने का प्रमुख कारण परकीयों के साथ संघर्ष तथा उनकी थोपी या नकल की गई व्यवस्थाओं को अपनाना और युगानुकूल परिवर्तन का अभाव है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों परकीयों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय अथवा परकीयों द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(ii) बदलते समय के अनुसार परिवर्तन और विकास न होने का क्या कारण है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि बदलते समय के साथ परिवर्तन और विकास क्यों नहीं हो सका। इसका उत्तर गद्यांश की पहली पंक्ति में मिलता है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
गद्यांश के अनुसार हमारी सांस्कृतिक चेतना क्षीण हो गई। जब चेतना ही कमजोर हो तो समाज युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन नहीं कर पाता। इसी कारण रूढ़ियाँ बन गईं।

अंतिम उत्तर:
सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने से समय के अनुसार परिवर्तन और विकास नहीं हुआ, और उसकी कमी से रूढ़ियाँ बनी रहीं।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों परकीयों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय अथवा परकीयों द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(iii) सांस्कृतिक चेतना क्या है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अर्थ:
सांस्कृतिक चेतना का अर्थ है अपनी संस्कृति, उसके मूल्यों, परंपराओं और आदर्शों के प्रति जागरूकता और बोध।

चरण 2: गद्यांश के संदर्भ में:
जब यह चेतना जीवित रहती है, तब समाज अपनी संस्कृति को समय के अनुसार सँवारता है। जब वह क्षीण होती है, तब रूढ़ियाँ और थोपी गई व्यवस्थाएँ पनपती हैं।

अंतिम उत्तर:
अपनी संस्कृति के मूल्यों और परंपराओं के प्रति सजग बोध ही सांस्कृतिक चेतना है।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* यह बात सही है कि भूल जाइये कि नारी श्रेष्ठ है और जिम्मेदारी उसी पर है, श्रेष्ठ पुरुष है और उसी पर गृहस्थी का सारा भार है। नारी में सेवा और संयम और कर्त्तव्य वही पैदा कर सकता है। यदि उनमें इन बातों का अभाव है तो नारी में भी अभाव रहेगा। नारियों में आज जो विद्रोह है, इसका कारण पुरुष का इन गुणों से शून्य हो जाना है।

(i) नारी के अंदर सेवा, संयम और कर्त्तव्य का भाव कैसे उत्पन्न होता है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश का संकेत:
गद्यांश की तीसरी पंक्ति कहती है कि नारी में सेवा, संयम और कर्त्तव्य का भाव वही पैदा कर सकता है। यहाँ 'वही' का अर्थ श्रेष्ठ पुरुष है, जिस पर गृहस्थी का भार है।

चरण 2: उत्तर का आधार:
पुरुष जब स्वयं इन गुणों को अपने आचरण में रखता है, तब नारी भी उन्हें अपनाती है। यदि पुरुष में इनका अभाव हो, तो नारी में भी अभाव रहेगा।

अंतिम उत्तर:
नारी में सेवा, संयम और कर्त्तव्य का भाव पुरुष के अपने उदाहरण और आचरण से उत्पन्न होता है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* यह बात सही है कि भूल जाइये कि नारी श्रेष्ठ है और जिम्मेदारी उसी पर है, श्रेष्ठ पुरुष है और उसी पर गृहस्थी का सारा भार है। नारी में सेवा और संयम और कर्त्तव्य वही पैदा कर सकता है। यदि उनमें इन बातों का अभाव है तो नारी में भी अभाव रहेगा। नारियों में आज जो विद्रोह है, इसका कारण पुरुष का इन गुणों से शून्य हो जाना है।

(ii) नारियों के अंदर आज विद्रोह की भावना क्यों उत्पन्न हो रही है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न आज की नारी में विद्रोह की भावना का कारण पूछता है। गद्यांश की अंतिम पंक्ति में यह साफ कहा गया है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
लेखक के अनुसार नारियों में आज जो विद्रोह है, उसका कारण पुरुष का सेवा, संयम

और कर्त्तव्य जैसे गुणों से शून्य हो जाना है। जब पुरुष ये गुण छोड़ देता है, तो नारी उससे असंतुष्ट होती है।

अंतिम उत्तर:
पुरुष के इन गुणों से रहित हो जाने के कारण नारियों में विद्रोह की भावना उत्पन्न हो रही है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* यह बात सही है कि भूल जाइये कि नारी श्रेष्ठ है और जिम्मेदारी उसी पर है, श्रेष्ठ पुरुष है और उसी पर गृहस्थी का सारा भार है। नारी में सेवा और संयम और कर्त्तव्य वही पैदा कर सकता है। यदि उनमें इन बातों का अभाव है तो नारी में भी अभाव रहेगा। नारियों में आज जो विद्रोह है, इसका कारण पुरुष का इन गुणों से शून्य हो जाना है।

(iii) नारियों के प्रति पुरुष का कैसा भाव होना चाहिए?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश से भाव:
लेखक के अनुसार श्रेष्ठ पुरुष पर गृहस्थी का भार है, और नारी के गुण उसी के आचरण पर निर्भर हैं।

चरण 2: उत्तर:
नारी के प्रति पुरुष का भाव आदर, सहयोग और उत्तरदायित्व का होना चाहिए। उसे स्वयं सेवा, संयम और कर्त्तव्य का पालन करके नारी के लिए आदर्श बनना चाहिए।

अंतिम उत्तर:
पुरुष का भाव नारी के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी का होना चाहिए, और उसे अपने आचरण से उसे प्रेरित करना चाहिए।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: अविलम्ब-अवलम्ब -

(A) चलायमान और रुकावट

(B) असहाय और विलम्बित

(C) शीघ्र और सहारा

(D) साथ में रहना और भागना

Correct Answer: (C) शीघ्र और सहारा

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
अविलम्ब का अर्थ है बिना देर किए, यानी शीघ्र।
अवलम्ब का अर्थ है आधार, आश्रय या सहारा।
अतः अविलम्ब-अवलम्ब का सही अर्थ-युग्म शीघ्र और सहारा है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) चलायमान और रुकावट: दोनों अर्थ गलत हैं।
(B) असहाय और विलम्बित: अविलम्ब का अर्थ विलम्बित नहीं, बल्कि उसका उलटा है। गलत।
(C) शीघ्र और सहारा: अविलम्ब = शीघ्र, अवलम्ब = सहारा। सही।
(D) साथ में रहना और भागना: दोनों अर्थ प्रश्न के शब्दों से नहीं जुड़ते।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) शीघ्र और सहारा।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: अभिराम-अविराम -

(A) उतार और तेजी

(B) एक साथ और चलायमान

(C) सुन्दर और लगातार

(D) आकर्षण और कोमल

Correct Answer: (C) सुन्दर और लगातार

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
अभिराम का अर्थ है सुन्दर, मनोहर। जैसे: नदी का अभिराम दृश्य।
अविराम का अर्थ है बिना रुके, लगातार। जैसे: वह अविराम परिश्रम करता रहा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) उतार और तेजी: दोनों अर्थ प्रश्न से मेल नहीं खाते।
(B) एक साथ और चलायमान: दोनों गलत हैं।
(C) सुन्दर और लगातार: अभिराम = सुन्दर, अविराम = लगातार। सही।
(D) आकर्षण और कोमल: अभिराम के लिए आकर्षण पूरा अर्थ नहीं है और अविराम का अर्थ कोमल नहीं है। गलत।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) सुन्दर और लगातार।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **पद**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'पद' एक बहुअर्थक शब्द है। वाक्य में प्रयोग के अनुसार इसका अर्थ बदल जाता है।

यहाँ शब्द 'पद' के दो अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
पद का पहला अर्थ है पैर या चरण। जैसे: भक्त ने गुरु के पद छुए।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
पद का दूसरा अर्थ है ओहदा या पदवी। जैसे: रमेश को बैंक में उच्च पद मिला है।

अंतिम उत्तर:
पद के दो अर्थ: (1) पैर, चरण; (2) ओहदा, पदवी।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **अंश**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'अंश' शब्द का प्रयोग सामान्य बोलचाल और गणित, दोनों में होता है। इसलिए इसके दो अलग अर्थ मिलते हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
अंश का पहला अर्थ है भाग या हिस्सा। जैसे: इस कहानी का अंश मुझे बहुत पसंद आया।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
अंश का दूसरा अर्थ है भिन्न का ऊपर वाला भाग (numerator), जिसे गणित में हर के ऊपर लिखते हैं। जैसे: भिन्न 3/5 में 3 अंश है।

अंतिम उत्तर:
अंश के दो अर्थ: (1) भाग, हिस्सा; (2) भिन्न का ऊपरी भाग।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **विधि**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'विधि' शब्द के कई अर्थ होते हैं। प्रसंग के अनुसार उसका अर्थ तय होता है। यहाँ इसके दो अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
विधि का पहला अर्थ है तरीका या ढंग। जैसे: दवा बनाने की विधि सरल है।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
विधि का दूसरा अर्थ है भाग्य या ब्रह्मा। जैसे: विधि का लिखा कोई नहीं टाल सकता।

अंतिम उत्तर:
विधि के दो अर्थ: (1) तरीका, ढंग; (2) भाग्य, ब्रह्मा।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **मधु**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
बहुअर्थक शब्द वह है, जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। यहाँ 'मधु' शब्द के दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. मधु = शहद, यानी फूलों के रस से मधुमक्खियों द्वारा बनाया गया मीठा पदार्थ।
2. मधु = वसन्त ऋतु या चैत्र मास।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
मधु (शहद) - सर्दी में गुनगुने पानी के साथ मधु लेना लाभदायक होता है।
मधु (वसन्त) - मधु के आते ही उपवन में कलियाँ खिल उठती हैं।

अंतिम उत्तर:
'मधु' के दो अर्थ हैं: (1) शहद, (2) वसन्त ऋतु।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए:
"जिसका कभी अंत न हो" -

(A) विद्यमान

(B) प्रकट

(C) अनंत

(D) साक्षात्

Correct Answer: (C) अनंत

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'जिसका कभी अंत न हो' के लिए एक शब्द चुनना है। इसमें अंत का न होना मुख्य भाव है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) विद्यमान: जो उपस्थित हो या मौजूद हो। इसमें अंत का भाव नहीं है।
(B) प्रकट: जो सामने आ गया हो या स्पष्ट हो। यह भी सही नहीं है।

(C) अनंत: अन् (नहीं) + अंत (समाप्ति)। जिसका कोई अंत या सीमा न हो, वह अनंत है। यही सही है।
(D) साक्षात्: आँखों के सामने, प्रत्यक्ष। इसका अर्थ अंतहीन नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) अनंत

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: "जानने की इच्छा रखने वाला" -

(A) ज्ञाता

(B) कुशाग्र

(C) जिज्ञासु

(D) विद्वान

Correct Answer: (C) जिज्ञासु

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'जानने की इच्छा रखने वाला' के लिए एक शब्द चुनना है। यहाँ जानकारी पा लेने का नहीं, जानने की चाह का भाव है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) ज्ञाता: जो जान चुका हो। यह इच्छा नहीं, ज्ञान की प्राप्ति बताता है।
(B) कुशाग्र: तेज बुद्धि वाला। इसका संबंध बुद्धि की तीव्रता से है।
(C) जिज्ञासु: ज्ञा (जानना) धातु से बना शब्द, जिसका अर्थ है जानने की इच्छा रखने वाला। यही सही है।
(D) विद्वान: जिसने बहुत ज्ञान पा लिया हो, पंडित।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) जिज्ञासु

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: गुरु शिष्य के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हैं।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: गुरु शिष्य के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हैं।
कर्ता 'गुरु' एकवचन है, पर सहायक क्रिया 'हैं' बहुवचन में लगी है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
क्रिया कर्ता के वचन के अनुसार चलती है। 'करता' एकवचन है, इसलिए उसके साथ 'है' आएगा।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: गुरु शिष्य के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। (दोष: वचन)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: वह कभी हानि-लाभ की चिंता नहीं करता है।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: वह कभी हानि-लाभ की चिंता नहीं करता है।
इस वाक्य में नकारात्मक (निषेधवाचक) क्रिया के साथ सहायक क्रिया 'है'

अनावश्यक रूप से जुड़ी है।

चरण 2: नियम:
जब वाक्य में 'नहीं' आता है और सामान्य वर्तमान की बात होती है, तब क्रिया 'करता' ही पर्याप्त रहती है। 'नहीं करता है' लिखना प्रयोग की अशुद्धि है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
वह कभी हानि-लाभ की चिन्ता नहीं करता।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: वह कभी हानि-लाभ की चिन्ता नहीं करता। (अशुद्धि: निषेध के साथ अनावश्यक सहायक क्रिया 'है'।)

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: हम पहाड़ में सैर करने गये थे।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: हम पहाड़ में सैर करने गये थे।
दोष 'पहाड़ में' में है। 'में' भीतर होने का बोध कराता है, जबकि पहाड़ की सतह पर या उसके ऊपर घूमा जाता है।

चरण 2: नियम (कारक-चिह्न का प्रयोग):
पहाड़, छत, मेज, सड़क जैसे स्थानों की सतह के लिए अधिकरण कारक में 'पर' आता है। 'में' का प्रयोग घर, कमरा, जंगल, नदी जैसे भीतरी स्थान के लिए होता है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
हम पहाड़ पर सैर करने गये थे।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: हम पहाड़ पर सैर करने गये थे। (अशुद्धि: कारक-चिह्न 'में' की जगह 'पर' चाहिए।)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: पक्षी पेड़ में है।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: पक्षी पेड़ में हैं।
यहाँ 'में' कारक-चिह्न का गलत प्रयोग हुआ है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
पक्षी पेड़ की डाल या शाखा पर बैठते हैं, पेड़ के भीतर नहीं रहते। जो वस्तु किसी के ऊपर टिकी हो, उसके लिए 'पर' आता है।
'में' भीतर होने का भाव देता है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: पक्षी पेड़ पर हैं। (दोष: कारक/प्रयोग)

12(a). 'वीर' रस अथवा 'हास्य' रस की परिभाषा सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
'वीर अथवा हास्य' में से यहाँ वीर रस का उत्तर लिखा गया है।

चरण 2: परिभाषा:
जब किसी वीरतापूर्ण कार्य, युद्ध या पराक्रम के वर्णन से हृदय में उत्साह जगे और वह विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट हो, तब वीर रस होता है। इसका स्थायी भाव उत्साह है। इसके चार भेद माने गए हैं: युद्धवीर, दानवीर, दयावीर और धर्मवीर।

चरण 3: उदाहरण:
मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे॥

चरण 4: स्पष्टीकरण:
मैथिलीशरण गुप्त के 'जयद्रथ वध' की इन पंक्तियों में अभिमन्यु अपने सारथी से कहता है कि उसे कोमल बालक न समझा जाए। वह यमराज से भी लड़ने को तैयार है। शत्रु आलंबन है, युद्ध का अवसर उद्दीपन है। निर्भय वचन अनुभाव हैं। गर्व, औत्सुक्य और धैर्य संचारी भाव हैं। स्थायी भाव उत्साह पूरी तरह पुष्ट है।

अंतिम उत्तर:
इन पंक्तियों में वीर रस (युद्धवीर) है।

12(b). 'रूपक' अलंकार अथवा 'अनुप्रास' अलंकार का लक्षण लिखते हुए एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चयन:
इस उत्तर में पहला अलंकार, रूपक, समझाया गया है।

चरण 2: लक्षण:
जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाए, अर्थात दोनों को एक ही मान

लिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इसमें समानता बताने वाले शब्द (जैसे, सम, सा) नहीं आते। यह अर्थालंकार है।

चरण 3: उदाहरण:
चरन-कमल बंदौं हरि राई।

चरण 4: उदाहरण की व्याख्या:
सूरदास कहते हैं कि मैं हरि के चरण-कमलों की वंदना करता हूँ। यहाँ चरण (उपमेय) को कमल (उपमान) ही कह दिया गया है, कमल के समान नहीं कहा। दोनों में भेद नहीं रखा गया। इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

अंतिम उत्तर:
उपमेय चरण पर उपमान कमल का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

12(c). 'कुण्डलिया' छन्द अथवा 'सोरठा' छन्द का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में कुण्डलिया अथवा सोरठा में से एक छन्द का लक्षण और उदाहरण माँगा गया है। यहाँ पहला छन्द 'कुण्डलिया' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
कुण्डलिया विषम मात्रिक छन्द है। यह एक दोहा और एक रोला के मेल से बनता है। इसमें छह चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
दोहे का अंतिम चरण रोला का पहला चरण बन जाता है। छन्द जिस शब्द से आरम्भ होता है, उसी पर समाप्त होता है।

चरण 3: उदाहरण (गिरिधर कविराय):

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान, राग रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना विचारे॥

चरण 4: लक्षण की जाँच:
पहली दो पंक्तियाँ दोहा हैं। दोहे का अंतिम चरण 'जग में होत हँसाय' तीसरी पंक्ति के आरम्भ में दोहराया गया है। पहला शब्द 'बिना विचारे' अंतिम चरण के अंत में भी आया है।

अंतिम उत्तर:
कुण्डलिया छह चरणों वाला, दोहा और रोला से बना मात्रिक छन्द है।

13. अपनी गली / मोहल्ले की नालियों की सफाई हेतु नगरपालिका के अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह एक औपचारिक पत्र है। इसे नगरपालिका के अधिकारी को लिखना है। पत्र में मोहल्ले की नालियों की सफाई की माँग विनम्र भाषा में करनी है।

चरण 2: पत्र का प्रारूप:
प्रेषक का पता, दिनांक, सेवा में (पद और पता), विषय, संबोधन, पत्र का मुख्य भाग, स्वनिर्देश और नाम।

चरण 3: पूरा पत्र:

प्रेषक,
क ख ग,
25, गांधी नगर,
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 10 सितम्बर 2026

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगरपालिका परिषद,
कानपुर।

विषय: मोहल्ले की नालियों की सफाई हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं गांधी नगर मोहल्ले का निवासी हूँ। हमारे मोहल्ले की नालियाँ पिछले कई सप्ताह से साफ नहीं की गई हैं। उनमें कूड़ा-करकट जमा हो गया है और गंदा पानी सड़क पर बहने लगा है।
गंदे पानी और कूड़े के कारण मोहल्ले में भयंकर दुर्गंध फैली रहती है। मच्छर और मक्खियाँ बहुत बढ़ गई हैं। इससे मलेरिया, डेंगू और पेट की बीमारियाँ फैलने का डर है। कई बच्चे बीमार भी हो चुके हैं। बरसात में स्थिति और भी बिगड़ जाती है।
अतः आपसे प्रार्थना है कि शीघ्र ही सफाई कर्मचारी भेजकर नालियों की सफाई करवाएँ। साथ ही नालियों में दवा और चूने का छिड़काव भी कराएँ। इस कृपा के लिए मोहल्लेवासी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित,
भवदीय,
क ख ग

निष्कर्ष:

पत्र में सही प्रारूप, विनम्र भाषा, समस्या का कारण और उसके दुष्परिणाम तथा समाधान की माँग, ये सभी बातें होनी चाहिए।

OR

किसी बैंक के प्रबन्धक को व्यवसाय करने हेतु ऋण प्राप्त करने के लिये एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह बैंक के प्रबन्धक को लिखा जाने वाला औपचारिक आवेदन पत्र है। इसमें व्यवसाय की योजना बताकर ऋण की माँग करनी है। भाषा विनम्र और स्पष्ट रखनी है।

चरण 2: पत्र के मुख्य अंग:
प्रेषक का पता, दिनांक, बैंक प्रबन्धक का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य भाग (परिचय, व्यवसाय की योजना, ऋण की राशि और वापसी का वचन), स्वनिर्देश।

चरण 3: पूरा पत्र:
प्रेषक,
क ख ग,
14, स्टेशन रोड,
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 15 सितम्बर 2026

सेवा में,
प्रबन्धक महोदय,
राष्ट्रीय बैंक, मुख्य शाखा,
लखनऊ।

विषय: व्यवसाय करने हेतु ऋण प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र।

मान्यवर,
मैं आपकी शाखा का खाताधारक हूँ। मैंने स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की है और बहुत समय से नौकरी खोज रहा था। अब मैं अपने शहर में स्वयं का किराने और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की दुकान खोलना चाहता हूँ।
इस काम के लिए मुझे लगभग पाँच लाख रुपये की आवश्यकता है। मेरे पास दुकान के लिए उचित स्थान है, परन्तु सामान खरीदने और सजावट के लिए धन का अभाव है। मैंने इस व्यवसाय की पूरी योजना बना ली है और उसके कागज इस पत्र के साथ संलग्न हैं।
अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे उचित ब्याज दर पर पाँच लाख रुपये का ऋण स्वीकृत करने की कृपा करें। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि ऋण की राशि किस्तों में समय पर लौटा दूँगा।

धन्यवाद सहित,
भवदीय,
क ख ग

निष्कर्ष:
अच्छे ऋण पत्र में अपना परिचय, व्यवसाय का नाम, आवश्यक धन, संलग्न कागज और समय पर भुगतान का आश्वासन जरूर होना चाहिए।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
नई शिक्षा नीति के गुण और दोष

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. नई शिक्षा नीति का परिचय

3. प्रमुख विशेषताएँ और गुण
4. दोष और आलोचनाएँ
5. सफल क्रियान्वयन के सुझाव
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

शिक्षा किसी राष्ट्र के भविष्य की नींव होती है। समय के साथ ज्ञान, तकनीक और रोजगार की आवश्यकताएँ बदलती हैं, इसलिए शिक्षा-प्रणाली में भी बदलाव जरूरी हो जाता है। लगभग तीन दशक पुरानी नीति को बदलने के लिए भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति लागू की।

नई शिक्षा नीति का परिचय

नई शिक्षा नीति को जुलाई 2020 में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने स्वीकृति दी। यह इसरो के पूर्व प्रमुख डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों पर आधारित है। इसने वर्ष 1986 की शिक्षा नीति का स्थान लिया।

प्रमुख गुण

इस नीति ने विद्यालयी शिक्षा का ढाँचा 10+2 की जगह 5+3+3+4 कर दिया, जिसमें प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा को भी जोड़ा गया है। कम से कम पाँचवीं कक्षा तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाने पर बल दिया गया है, जिससे बच्चे विषय को आसानी से समझते हैं। छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप की व्यवस्था है। कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच की कठोर दीवार हटाकर विषय चुनने की स्वतंत्रता दी गई है। उच्च शिक्षा में बहु-प्रवेश और बहु-निकास की सुविधा, चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम और अकादमिक क्रेडिट बैंक जैसी बातें विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हैं। शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत खर्च करने का लक्ष्य भी रखा गया है।

दोष और आलोचनाएँ

नीति के कुछ पक्षों पर प्रश्न भी उठे हैं। पर्याप्त धन, भवन और प्रशिक्षित शिक्षकों के बिना इसे लागू करना कठिन है। शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है, इसलिए कई राज्यों

को केन्द्र के बढ़ते हस्तक्षेप की आशंका है। त्रिभाषा सूत्र को लेकर भाषा-विवाद की सम्भावना बनी रहती है। ऑनलाइन शिक्षा पर बल देने से गाँवों और गरीब परिवारों के बच्चे पिछड़ सकते हैं, क्योंकि उनके पास साधन कम हैं।

सफल क्रियान्वयन के सुझाव
सरकार को शिक्षकों की भर्ती और प्रशिक्षण पर ध्यान देना चाहिए। विद्यालयों में पुस्तकालय, प्रयोगशाला और इंटरनेट जैसी सुविधाएँ बढ़ानी होंगी। राज्यों से परामर्श करके ही नीति को चरणबद्ध रूप से लागू करना उचित रहेगा।

उपसंहार
नई शिक्षा नीति में रटने की जगह समझ, कौशल और रचनात्मकता पर बल दिया गया है, जो सराहनीय है। यदि इसे ईमानदारी और पर्याप्त संसाधनों के साथ लागू किया जाए तो यह भारत को ज्ञान-आधारित समाज बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष:
निबन्ध में नीति के गुणों और दोषों का सन्तुलित विवेचन ही उत्तर का मुख्य आधार है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **मेरा प्रिय कवि**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
(यहाँ प्रिय कवि के रूप में गोस्वामी तुलसीदास को चुना गया है। परीक्षार्थी अपनी पसंद का कोई भी कवि चुन सकता है, ढाँचा यही रहेगा।)
1. प्रस्तावना
2. जीवन-परिचय
3. प्रमुख रचनाएँ
4. काव्यगत विशेषताएँ

5. भाषा और शैली
6. मुझे प्रिय होने के कारण
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में अनेक श्रेष्ठ कवि हुए हैं, पर मुझे सबसे अधिक प्रभावित गोस्वामी तुलसीदास ने किया है। वे भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कविता में भक्ति, नीति और लोकजीवन का सुन्दर मेल मिलता है।

जीवन-परिचय

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 के लगभग राजापुर (बाँदा, उत्तर प्रदेश) में माना जाता है। उनके गुरु नरहरिदास थे। कहा जाता है कि पत्नी रत्नावली की फटकार ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और वे पूरी तरह राम-भक्ति में लग गए। उन्होंने काशी में अपना अधिकांश जीवन बिताया और वहीं सन् 1623 के लगभग उनका देहावसान हुआ।

प्रमुख रचनाएँ

रामचरितमानस उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति है। इसके अतिरिक्त कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कृष्ण-गीतावली, जानकीमंगल और पार्वतीमंगल उनकी अन्य रचनाएँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

तुलसीदास की कविता का मूल स्वर राम-भक्ति है, जिसमें दास्य भाव की प्रधानता है। उन्होंने समन्वय की भावना अपनाई, जैसे शैव और वैष्णव, ज्ञान और भक्ति, सगुण और निर्गुण के बीच। मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श चरित्र के साथ आदर्श पिता, पुत्र, भाई और राजा का रूप दिखता है। नीति और लोक-कल्याण की बात वे सरल शब्दों में कह देते हैं: 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥'

भाषा और शैली

रामचरितमानस अवधी भाषा में तथा कवितावली और विनयपत्रिका ब्रज भाषा में लिखी गई है। दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त और सवैया जैसे अनेक छन्दों पर उनका पूरा अधिकार था। उनके काव्य में रूपक, उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार तथा भक्ति, करुण और वीर रस स्वाभाविक रूप से मिलते हैं।

मुझे प्रिय होने के कारण

मुझे तुलसीदास इसलिए प्रिय हैं क्योंकि उनकी कविता केवल पढ़ने की नहीं, जीवन में उतारने की चीज है। उसमें परिवार, समाज और राजा, सबके लिए आदर्श आचरण की सीख मिलती है। कठिन समय में उनकी चौपाइयाँ धैर्य और आशा देती हैं।

उपसंहार

तुलसीदास ने अपने काव्य से हिन्दू समाज को नई चेतना दी और जन-जन तक राम की कथा पहुँचाई। चार सौ वर्ष से अधिक बीत जाने पर भी उनकी वाणी उतनी ही जीवन्त है। इसीलिए वे मेरे प्रिय कवि हैं।

निष्कर्ष:

निबन्ध में कवि का परिचय, रचनाएँ, विशेषताएँ और अपनी पसंद के कारण क्रम से देने पर उत्तर पूर्ण बनता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण बिगड़ने के कारण
3. बिगड़ते पर्यावरण के दुष्परिणाम
4. संरक्षण के उपाय

5. सरकार और समाज की भूमिका
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

हमारे चारों ओर की हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे और जीव-जन्तु मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। 'परि' का अर्थ है चारों ओर और 'आवरण' का अर्थ है ढकने वाला। यही आवरण हमारे जीवन का आधार है। आज औद्योगिक विकास की दौड़ में मनुष्य ने इसी आधार को कमजोर कर दिया है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

पर्यावरण बिगड़ने के कारण

जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, इसलिए भोजन, आवास और ईंधन की माँग भी बढ़ी है। इसे पूरा करने के लिए जंगल काटे जा रहे हैं। कारखानों का धुआँ हवा को जहरीला बनाता है और उनका गंदा पानी नदियों में बहाया जाता है। वाहनों की बढ़ती संख्या से शहरों की हवा साँस लेने योग्य नहीं रही। प्लास्टिक का कचरा मिट्टी और जल दोनों को खराब करता है।

बिगड़ते पर्यावरण के दुष्परिणाम

प्रदूषित हवा से दमा, फेफड़ों के रोग और आँखों की बीमारियाँ बढ़ती हैं। दूषित जल से हैजा, पीलिया और टाइफाइड फैलता है। ग्रीनहाउस गैसों और ओजोन परत के क्षरण से धरती का तापमान बढ़ रहा है। इससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल-स्तर उठ रहा है और बाढ़, सूखा जैसी आपदाएँ बार-बार आ रही हैं। अनेक पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ समाप्त होने के कगार पर हैं।

संरक्षण के उपाय

सबसे पहला उपाय वृक्षारोपण है, क्योंकि पेड़ हवा को शुद्ध करते हैं और वर्षा में सहायक होते हैं। कारखानों में धुएँ और गंदे पानी को साफ करने के संयन्त्र अनिवार्य होने चाहिए। सार्वजनिक परिवहन और साइकिल को बढ़ावा देना चाहिए। सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोत अपनाने चाहिए। प्लास्टिक का प्रयोग घटाकर कपड़े या जूट के थैले काम में लाने चाहिए। वर्षा-जल का संचय और जल का सोच-समझकर उपयोग भी जरूरी है।

सरकार और समाज की भूमिका

सरकार ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, वन संरक्षण कानून और राष्ट्रीय हरित

अधिकरण जैसी व्यवस्थाएँ की हैं। स्वच्छ भारत अभियान भी इसी दिशा में एक कदम है। परन्तु केवल कानून से काम नहीं चलता। जब तक हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेगा, तब तक सुधार सम्भव नहीं। विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा और विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) जैसे आयोजन लोगों को जागरूक करते हैं।

उपसंहार

पर्यावरण हमें विरासत में नहीं मिला, हमने इसे आने वाली पीढ़ियों से उधार लिया है। यदि हमने आज इसे नहीं सँभाला, तो भविष्य अंधकारमय होगा। हमें पेड़ लगाने, जल बचाने और कचरा कम करने का संकल्प लेना चाहिए। स्वच्छ पर्यावरण ही स्वस्थ जीवन और सुरक्षित भविष्य का आधार है।

निष्कर्ष:

पर्यावरण की रक्षा हम सबका कर्तव्य है। पेड़ लगाकर, जल बचाकर और प्रदूषण घटाकर ही पृथ्वी को जीवन के योग्य रखा जा सकता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
बेरोजगारी की समस्या और समाधान

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. बेरोजगारी का अर्थ
3. बेरोजगारी के कारण
4. बेरोजगारी के दुष्परिणाम
5. समस्या का समाधान
6. सरकारी प्रयास
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

भारत आज संसार का सबसे युवा देश है, परन्तु यहाँ के करोड़ों युवा काम की तलाश में भटक रहे हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उन्हें योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता। बेरोजगारी की यह समस्या देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बन गई है।

बेरोजगारी का अर्थ

जब कोई व्यक्ति काम करने के योग्य और इच्छुक होता है, फिर भी उसे काम नहीं मिलता, तो उसे बेरोजगार कहते हैं। कुछ लोगों के पास काम तो होता है, पर वह उनकी योग्यता से बहुत कम स्तर का होता है। इसे अर्द्ध-बेरोजगारी कहा जाता है।

बेरोजगारी के कारण

इसका सबसे बड़ा कारण तेजी से बढ़ती जनसंख्या है। नौकरियाँ कम हैं और आवेदन करने वाले बहुत अधिक। हमारी शिक्षा-प्रणाली भी किताबी ज्ञान पर अधिक जोर देती है और व्यावहारिक कौशल कम सिखाती है। लोग खेती छोड़कर शहरों की ओर भाग रहे हैं। बड़ी मशीनों के आने से कुटीर और लघु उद्योग कमजोर हुए हैं। सरकारी नौकरी के मोह के कारण भी युवा निजी काम या स्वरोजगार से बचते हैं।

बेरोजगारी के दुष्परिणाम

बेरोजगार युवक निराशा और तनाव में घिर जाता है। गरीबी बढ़ती है और परिवार का पालन-पोषण कठिन हो जाता है। कई बार युवक चोरी, नशे और अपराध की राह पकड़ लेते हैं। देश की प्रतिभा विदेश चली जाती है और समाज में असन्तोष फैलता है।

समस्या का समाधान

जनसंख्या पर नियन्त्रण करना सबसे पहला कदम है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाए और तकनीकी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर बल दिया जाए। कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन मिले। गाँवों में ही रोजगार के साधन बढ़ाए जाएँ, ताकि शहरों की ओर पलायन रुके। युवाओं को अपना काम शुरू करने की सोच अपनानी चाहिए।

सरकारी प्रयास

सरकार ने मनरेगा, कौशल भारत, स्टार्टअप इण्डिया, मुद्रा योजना और मेक इन इण्डिया जैसी योजनाएँ चलाई हैं। इनसे लाखों लोगों को काम और प्रशिक्षण मिला है, फिर भी अभी बहुत कुछ करना शेष है।

उपसंहार

बेरोजगारी दूर होने पर ही देश की युवा-शक्ति राष्ट्र-निर्माण में लग सकेगी। सरकार,

समाज और युवा तीनों को मिलकर प्रयास करना होगा। तभी भारत समृद्ध और आत्मनिर्भर बनेगा।

निष्कर्ष:
कौशल, स्वरोजगार और सही नीतियों के सहारे बेरोजगारी की समस्या को कम किया जा सकता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **जीवन में वृक्षारोपण का महत्व**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. वृक्षों का महत्व
3. वनों की कटाई और उसके परिणाम
4. वृक्षारोपण के उपाय और कार्यक्रम
5. हमारा कर्तव्य
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:
प्रस्तावना
वृक्ष धरती का श्रृंगार और मनुष्य के सच्चे मित्र हैं। ये हमें बिना कुछ माँगे फल, फूल, छाया, लकड़ी और शुद्ध वायु देते हैं। हमारे पुराणों में कहा गया है कि एक वृक्ष दस पुत्रों के समान होता है। आज जब जंगल तेजी से कट रहे हैं, तब वृक्षारोपण का महत्व और भी बढ़ गया है।
वृक्षों का महत्व
वृक्ष दिन में कार्बन डाइऑक्साइड लेकर हमें ऑक्सीजन देते हैं। इसी से हम साँस ले पाते हैं। इनकी जड़ें मिट्टी को बाँधकर भू-स्खलन और कटाव रोकती हैं। वृक्षों से

बादल आकर्षित होते हैं और वर्षा होती है। इनसे हमें भोजन, औषधियाँ, ईंधन और इमारती लकड़ी मिलती है। कागज, रबर और गोंद जैसी वस्तुएँ भी पेड़ों से बनती हैं। पक्षियों और अनेक जीवों का घर भी वृक्ष ही हैं।

वनों की कटाई और उसके परिणाम

बढ़ती आबादी, खेती के विस्तार, सड़कों और कारखानों के लिए वनों को बेरहमी से काटा जा रहा है। इसका परिणाम यह है कि वर्षा कम हो रही है, धरती का तापमान बढ़ रहा है और नदियाँ सूख रही हैं। वर्षा में मिट्टी बहने से बाढ़ आती है और भूमि बंजर होती है। वन्य-जीवों के घर उजड़ने से वे बस्तियों में घुस आते हैं।

वृक्षारोपण के उपाय और कार्यक्रम

जितने पेड़ काटे जाएँ, उससे अधिक लगाए जाने चाहिए। सड़कों, नहरों, रेल-लाइनों के किनारे और खाली भूमि पर पौधे लगाए जाएँ। हमारे देश में हर वर्ष जुलाई के पहले सप्ताह में वन-महोत्सव मनाया जाता है, जिसकी शुरुआत सन् 1950 में हुई थी। सरकार सामाजिक वानिकी जैसे कार्यक्रम चलाती है। विद्यालयों में भी पौधे लगाने की प्रतियोगिताएँ होनी चाहिए।

हमारा कर्तव्य

हमें केवल पौधा लगाकर छोड़ नहीं देना चाहिए, उसकी सिंचाई और सुरक्षा भी करनी चाहिए। जन्मदिन, विवाह और त्योहार जैसे अवसरों पर पौधा लगाने की परम्परा बनानी चाहिए। लोगों को वृक्षों के महत्व के बारे में समझाना भी हमारा दायित्व है।

उपसंहार

वृक्षारोपण केवल सरकारी काम नहीं, यह जन-आन्दोलन बनना चाहिए। आज लगाया गया एक पौधा कल हमारी सन्तानों के लिए छाया, फल और जीवन देगा।

निष्कर्ष:

पेड़ लगाना जीवन बचाना है। हरी-भरी धरती ही सुखी जीवन का आधार है।